ग्रामीण विकास मे संगीत शिक्षा का योगदान

शिव शम्भू कपूर
शोध छात्र (संगीत–तबला)
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय
चित्रकूट, सतना (म0प्र0)

संगीत शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण विकास से तात्पर्य आम तौर पर शिक्षण की ऐसी प्रणाली से है जिसके माध्यम से गाँवो मे विद्यमान समस्त समस्याओं को कम करके गाँवो के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा बौद्धिक इत्यादि स्तर को एक नया आयाम दिया जा सके। जिसके फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र मे रहने वाले समस्त लोगों के जीवन स्तर मे सुधार किया जा सके। गाँवो मे बसने वाले भारत के सर्वांगीण विकास की परिकल्पना तब तक साकार नही हो सकती जब तक कि गाँव एवं ग्रामीण विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता नही दी जाती।

जीवन के प्रत्येक परिवेश के लिए शिक्षा एक न्यूनतम सच्चाई है। वस्तुतः इसी अस्त्र का प्रयोग कर मानव ग्रामीण से शहरी बन सका। परंतु इसका अर्थ यह नही लेना चाहिए कि ग्रामीणों को कोई सरोकार नही दी है, वस्तुतः भारतीय ग्रामीण ज्ञान के अंतः चक्षुओं से परिपूर्ण होता है। उसे प्रक ति की विराट सत्ता पर अगाध विश्वास है तथा आम के पेड़ मे इमली नही फलती– इस तथ्य के उद्घाटन के लिए उसे किसी आयातित ज्ञान की आवश्यकता भी नही होती। जब–जब पढ़े–लिखे विशिष्ट जनों की वजह से भारत संकट मे आया है, निरक्षरों ने अपना वर्चस्व न्योछावर कर, इसका मान बढ़ाया है। परंतु, जहां तक ग्रामीण शिक्षा का प्रश्न है, सरकार ने इस दिशा मे भी कई आवश्यक कदम उठाये हैं। शिक्षा गारंटी योजना के अर्न्तगत प्रत्येक एक किमी के क्षेत्र मे यदि विद्यालय नही है तो उसका निर्माण एवं संचालन सरकार की जिम्मेदारी है। इस दिशा मे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के प्रयास भी प्रशंसनीय हैं। जिसने संचार माध्यमों का उपयोग कर शिक्षा की अपरिहारिता सुनिश्चित करने का महोद्योगी कार्य किया है। अब गावों मे पढ़ने की एक लहर चल पड़ी है। बच्चों को तो छोड़ ही दें, बड़े–बुजुर्ग भी प्रोढ़– शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं।

भारत गाँवों का देश है, जहां की सत्तर प्रतिशत से अधिक की जनसंख्या गाँवो मे ही निवास करती है। यदि यह कहा जाय कि भारत की आत्मा गाँवो मे ही बसती है तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। ग्रामीण जीवन की प्राचीनता एवं महत्व को उजागर करने वाली एक प्राचीन उक्ति है कि, *नगरो का निर्माण मनुष्य ने किया, ग्राम ईश्वर द्वारा बसाए गए।* निःसंदेह हमारी सभ्यता एवं संस्कति का पूर्ण और स्वाभाविक विकास ग्रामीण अंचलों मे ही हुआ है।

ग्रामीण भारत मे निवास करने वाली सम्पूर्ण जनसंख्या का मुख्य कार्य कषि कर्म है। अधिकांश शहरी आवश्यकताओं की पूर्ति गांवो द्वारा ही की जाती है। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनो रूपो मे गांव राष्ट्र के विकास एवं प्रगति मे अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं। भारतीय गांवो स लगभग 550 प्रकार की व्यापारिक दष्टि से अति–महत्वपूर्ण लकड़ियां प्राप्त होती हैं, जिसका उपयोग फर्नीचर, माचिस आदि बनाने मे होता है। इसके अतिरिक्त

गोबर और लकड़ी मिलकर देश के कुल शक्ति संसाधनों को 34.6ः शक्ति का उत्पादन करते हैं। सम्पूर्ण देश मे सभी प्रकार के खाद्यान्नों की आपूर्ति गांव ही करते हैं। ग्रामीण अंचलो मे कुछ ऐसी वनस्पतियां तथा जड़ी–बूटियां पाई जाती हैं, जिनसे विभिन्न प्रकार की औषधियां तैयार की जाती हैं। ग्रामीण जीवन फल–फूल से भरपूर होने के कारण पर्यावरण को शुद्धता प्रदान करता है तथा भरपूर मात्रा मे आक्सीजन भी प्रदान करता है। गांवो मे बनी विभिन्न वस्तुओं जैसे– लाख, तारपीन का तेल, चंदन का तेल एवं चंदन की लकड़ी से बनी विभिन्न कलात्मक वस्तुएं, आदिवासी पेंटिंग इत्यादि का निर्यात कर सरकार द्वारा प्रतिवर्ष लगभग 50 करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा का अर्जन किया जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था मे गांवो की अतिमहत्वपूर्ण भागीदारी को देखते हुए ही उन्हे देश की *राष्ट्रीय निधि* की संज्ञा प्रदान की गई है। अतः हमे अपने देश की इस अमूल्य निधि के विकास हेतु विभिन्न प्रयत्न करने चाहिए, क्योकि विकसित गांव ही विकसित भारत का आधार–स्तम्भ बन सकते हैं।

इस बात मे कोई संदेह नही है कि स्वतंत्रता प्राप्ति क इन 67 वर्षों मे राष्ट्र ने ही नही बल्कि ग्राम ने भी विभ्न्नि चुनौतियों का सामना करते हुए विकास के अनेक सोपान चढ़ते हुए कई कीर्तिमान स्थापित किए है। एक ओर जहां ग्राम विकास की गति को तीव्र से तीव्रतम करने के लिए प्रयत्नशील है वहीं दूसरी ओर प्राक तिक विपदाएं विकास मे बाधक बनती जा रही हैं। गांवो मे संसाधनो की कमी एवं बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण राज्य के ग्रामीण क्षेत्र मे बेरोजगारी की समस्या भी सदैव बढ़ती जा रही हैं। फलतः निर्धनता, बेरोजगारी और विषमता आदि समस्याओ से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को लगातार आघात पहुंचता दिखाई पड़ रहा है। अतः ग्राम पंचायत, राज्य सरकार व केन्द्र सरकार तथा स्वतः व्यक्ति को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गांवो को न केवल विकास की मुख्य धारा से प्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण विकास हेतु विपुल संसाधन उपलब्ध कराकर ग्रामीण अंचलों मे जनसुबिधाओं का विस्तार, रोजगार के आर्थिक अवसर एवं गरीब परिवारो के आर्थिक स्तर व रहन–सहन के स्तर मे सुधार लाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

आधुनिक युग मे होने वाले नये आविष्कारों व परिवर्तनों ने न केवल देश मे नयी क्रान्ति उत्पन्न की है, अपितु अनेको समस्याओं भी जन्म दिया है। इसका सीधा व परोक्ष असर गांवो मे देखने को मिल रहा है, जिससे गांवो मे अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो प्रत्येक व्यक्ति के बौद्धिक स्तर को बढ़ाके प्रत्येक व्यक्ति को विकास की ओर अग्रसर करेगा। अब ये विकास चाहे किसी भी क्षेत्र मे हो, क्योकि जब तक अधिक से अधिक क्षेत्रों की समस्याओं को कम नही किया जायेगा विकास की दर बढ़ेगी नही।

ग्रामीण विकास की समस्याओं को कम करने के लिए हमे निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा।

–शिक्षा की समस्या

–स्वास्थ्य (चिकित्सा) की समस्या

–सामाजिक स्तर की समस्या

–बेरोजगारी की समस्या

–कृषि के उच्च स्तर की समस्या

–सांस्कृतिक स्तर की समस्या

–नैतिक व्यक्तियों के निर्वाह की समस्या

–औद्योगिक समस्या

–आर्थिक समस्या

–परियोजनाओं की समस्या

ग्रामीण विकास मे संगीत शिक्षा का योगदानः–

"साहित्य– संगीत– कला–विहीनः।
साक्षात्पशुः पुच्छ–वषाण –हीनः।।"

अर्थात्, साहित्य और संगीत कला से विहीन व्यक्ति पूंछ और सींग के बिना साक्षात् पशु के समान है।

कहा जाता है कि संगीत कला मनुष्य–मनुष्य के बीच सम्पर्क का एक साधन है और व्यक्तियों मे तथा मानव–जाति के कल्याणर्थ जीवन और प्रगति के लिये अनिवार्य है।

संगीत शिक्षा एक ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति के मन को आध्यात्म की ओर ले जाकर सत्य का ज्ञान कराया जा सकता है और जब सत्य का ज्ञान हो जायेगा तो अवश्य ही व्यक्ति का विकास होगा। और जब व्यक्ति का विकास होगा तो समाज, समुदाय और ग्राम का भी विकास होगा। संगीत ही एक ऐसा माध्यम है जिससे लोगो से सीधा संपर्क स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति मे संगीत का बहुत बड़ा महत्व है। व्यक्ति के जन्म से लेकर मत्यु तक संगीत उसके साथ रहता है। प्रकति के कढ़–कढ़ मे संगीत व्याप्त है।

प्राचीन काल से ही गुरूकुल मे छात्रों को ज्योतिष, व्याकरण, संस्कत तथा दर्शन शास्त्र के साथ–साथ संगीत की शिक्षा भी अनिवार्य रूप से दी जाती थी। यदि देश की संस्क ति को समझना है तो गांवो को समझना आवश्यक है, क्योकि गांवो मे ऋतुओं, त्योंहारों और यहां तक की खेतों मे खेती करते समय भी हमारी संस्क ति व परम्पारओं को नही भूला जाता। और संगीत ही हमारी संस्कति व परम्पारओं से हमे जोड़े रखती है। जैसे जब भी खेत मे खेती की जाती है तो फसल को बोते समय गीत गाये जाते हैं तब जब फसल तैयार हो जाती है तो गीतों को गाते हुए फसल की कटाई की जाती है। प्रत्येक ऋतुओं मे ऋतु गीत गाये जाते है, जैसे सावन मे सावन गीत चैत मे चैती गीत आदि। जो केवल गांवो मे ही देखने को मिलता है। और जब बच्चे के जन्म की बात करें तो आज भी गांवो मे ऐसी प्रथा है कि जब बच्चा माँ के गर्भ मे गर्भधारण करता है तभी से गर्भागीत व जन्म के समय जन्मोत्सव गीत और व्यक्ति के मुंडन संस्कार, जनऊ संस्कार आदि सभी 16 संस्कारों मे भी लोकगीतों का प्रचलन देखने को मिलता है। अर्थात् संगीत का गांव व ग्रामीण समुदाय से घनिष्ट सम्बन्ध है। और संगीत एक ऐसी ललित कला है जो हमे अनुशासन मे रहने की शिक्षा देती है, क्योंकि संगीत मे लय है और लय का मतलब है अनुशासन।

संगीत की इसी परंपराओं को ध्यान मे रखते हुए अनेकों संस्थाएं, विद्यालय और यहां तक की विश्वविद्यालय भी संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे है। जिससे संगीत का प्रचार व प्रसार हो सके।

संगीत के माध्यम से हम गांव के लोगों को जागरूक कर सकते हैं जैसे रामलीला, नौटंकी तथा नुक्कड़ नाटक के माध्यम से। और संगीत ही गांव के लोगों के मनोरंजन का साधन है।

गांव मे विकास के लिए चलने वाली सभी योजनाओं को घर–घर तक संगीत के माध्यम से पहुँचाया जा सकता है। संगीत एक प्रकार से योगसाधना का सरल सूत्र है। संगीत की साधना करने से स्वतः ही प्राणायाम हो जाता है, और प्राणायाम अनेकों बीमारियों को खत्म करती है। अतः संगीत चिकित्सा का प्रायः भी है।

गांवों के विकास के लिए संगीत के माध्यम से दूरर्दशन, रेडियो तथा अनेक ऐसे उपकरणों द्वारा ऐसे प्रोग्रामों को प्रसारित करना चाहिये जो गांव मे स्वास्थ्य, पंचवर्षीय योजना, परिवार नियोजन, जागरूकता आदि योजनाओं को अपनाने की जागरूकता पैदा करे तथा घर–घर तक इन योजनाओं के बारे मे जानकारी प्रदान की जाये जिससे सभी लोग इन्हे अपनायें तथा गांव का विकास हो।